Acknowledgement

[redacted]

नि वे द न

अहिन्दी भाषी होते हुए भी जीवन के आरंभिक दिनों से ही मेरे हृदय में हिन्दी के प्रति श्रद्धा रही है । इसी के फलस्वरूप गत बीस वर्षों से अहिन्दी भाषा-भाषी छात्रों को हिन्दी पढ़ाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ । इस दीर्घावधि में मैंने यह अनुभव किया कि आन्ध्र प्रान्त के तेलुगु भाषी छात्र हिन्दी अधिगम में पिछड़े हुए हैं । इसके परिणामस्वरूप आन्ध्र प्रदेश प्रत्येक सरकार प्रतिवर्ष हिन्दी के अंकों को घटा रही है । यह नीति हिन्दी के प्रति घातक एवं शिक्षा के साधारण स्तर पर बुरा प्रभाव डालनेवाली है ।

अतः मैंने इस शोध प्रबन्ध के द्वारा आन्ध्र प्रान्त के छात्रों के सामने हिन्दी अधिगम की समस्याओं एवं तत्-सम्बन्धी कठिनाइयों के कारणों को जानने का प्रयास किया ।

इस आकांक्षा के फलस्वरूप महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के शिक्षा एवं मनोविज्ञान संकाय के प्रोफेसर एवं विभागीय अध्यक्ष श्री एम् बी. बुच जी ने मुझे इस क्षेत्र में शोधकार्य करने का सुअवसर दिया है जिसके लिए मैं सदा उनका आभारी हूँ ।

तत्पश्चात् मैं मेरे मार्गदर्शक, प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एवं हिन्दी के मूक सेवी प्रो. एम्. ए. कुरैशी जी की चरण स्पर्श वंदना करता हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर मुझे योग्य पथ-प्रदर्शन किया है । उनकी इस अनुकम्पा को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना मेरे लिए संभव नहीं है ।

आन्ध्र प्रदेश अभिलेखन निदेशालय के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट किये बिना नहीं रह सकता, जिसने दो वर्ष की अंशकालीन छात्रवृत्ति देकर

इस कार्य की पूर्ति में पूर्ण सहयोग दिया है ।

तदुपरान्त मैं डा0 कृष्णमाचारलू, डा0 ब्रजेश्वर वर्मा, प्रो0 वेदान्ताचारी, प्रो0 परमेश्वरन्, डा0 एम · चतुर्वेदी, डा0 आर · पी · कुलश्रेष्ठ, डा0 ज़ेड · एम · कुरैशी, डा · गोयल, तथा डा · विजयराघवरेड्डी के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने समय समय पर अपनी अमूल्य सलाह देकर मुझे इस शोधकार्य में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन दिया ।

आन्ध्र के सभी हिन्दी अध्यापकगण, प्रधानाध्यापक-गण, विभिन्न विश्वविद्यालय एवं शोध संस्थाओं के विभागीय अध्यक्षों ने मेरे इस कार्य में पर्याप्त योगदान दिया है जिनका मैं हृदय से आभारी हूँ ।

बचपन से ही मेरे मन में शिक्षा की ज्योति जगाकर मुझे 'मानव' बनाने में सतत प्रयत्न करनेवाली प्रथम गुरु मेरी माता पानुगण्टि लिंगम्मा के प्रति मैं सदा ऋणी हूँ । इस कार्य में मुझे मेरी पत्नी विजया से भी पर्याप्त प्रेरणा प्राप्त हुई ।

प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जिन जिन महानुभावों का इस कार्य में मुझे सहयोग मिला उनका मैं आभारी हूँ ।

— पी · चिन्नप्पा
शोधकर्ता